ढोंग का भी उन्होंने पूरे जोर से भांडाफोड़ किया। उन्होंने साफ शब्दों में और सीधे -सीधे पूछा ''किसके साथ हैं आप कला के धनी'' (ठीक उसी तरह जैसे मुक्तिबोध पूछते हैं पाटर्नर तुम किस ओर हो?)

गोर्की साहित्यकारों के रूबरू होकर कहते हैं संस्कृति के महारथियों, आप किसके साथ है क्या आप संस्कृति की रचना करने वाले आम मेहनतकश लोगों के साथ हैं और जीवन के नये रूपों का निमार्ण करने के पक्ष में हैं। या आप इन लोगों के विरूद्ध हैं और गैर जिम्मेदार लुटेरों की जात - ऐसी जात को बचाये रखने के पक्ष में हैं जो उपर से नीचे तक सड़ गयी है और बस मरण के ही जोर में हरकत कर रही है?

मां उपन्यास की शुरूआत तत्कालीन रूस के मजदूर वर्ग और आम जनता की नारकीय स्थिति के वर्णन से शुरू होती है- मजदूरों की बस्ती के धुएं और बदबूदार हवा में हर रोज फैक्टरी के भोंपू का कांपता हुआ ककर्श स्वर गूंज उठता या और उसके आवाहन पर छोटे -छोटे मटमैले घरों से उदास लोग सहमे हुए तिलचटों की तरह निकलकर भाग खड़े होते हैं..... और वे फिर पुतलों की भांति सड़क पर चल पड़ते गंदे, चेहरों पर कालिख, भूखे दांत चमकते हुए और शरीर से मशीन के तेल की दुर्गंध छोडते हुए। अपने पति के जीवन के ढर्रे से, शराब और मौजमस्ती से अलहदा बेटे पावेल के गंभीर पढ़ाकू और सलीकेदार व्यक्तित्व से चिंतित मां पूछती है, पावेल किसलिए तुम ऐसा करते हो, उसने चेहरा उठाकर मां की ओर देखा, फिर बड़े ही शान्त भाव से बोला -क्योंकि मैं सच्चाई जानना चाहता हूं''। मां को समझते देर न लगी कि उसके बेटे ने जन्म भर के लिए अपने आपको किसी बेहद गुप्त और खतरनाक काम के लिए समर्पित कर दिया है, - तो तुम करना क्या चाहते हो अचानक मां ने उसकी बात काटकर पूछा। पहले खुद पढूंगा और फिर दूसरों को पढ़ाउंगा। हम मजदूरों को पढ़ना चाहिए। हमें इस बात कि तह तक पहुंचना चाहिए और इसे भली- भांति समझ लेना चाहिए कि हमारी जिंदगी में इतनी मुश्किलें क्यों हैं।

सच्चाई की तलाश ने ही पावेल जैसे लाखों मजदूरों, किसानो, गरीब गुर्बों को जारशाही रूस के शोषकों, जमीदारों पूंजीपतियों कुलकों के खिलाफ क्रांतिकारी संघर्षो में हिस्सा लेने और एक नये समाज- मेहनतकशों के राज्य की स्थापना के लिए महान क्रांतिकारी लेनिन की अगुआई वाले रूसी कम्युनिस्ट पार्टी(बोल्शेविक) से दृढ़ता से जुड़ने को बाध्य कर दिया। वह यातना, जेलखाना तथा गोलियों की बौछारों का दौर ही था जब अन्याय के खिलाफ न्याय के लिए संघर्ष में मां पेलागेया, बेटे पावेल के अधूरे काम को पूरा करने में जुट गई थी। मई दिवस के अवसर पर संगीनों के साये में निकाले गए मजदूरों के जुलूस को संबोधित करते हुए पावेल ने कहा - लोग कहते हैं कि इस पृथ्वी पर भांति-भांति के लोग रहते हैं- यहूदी और जर्मन, अंग्रेज और तातार। मगर मैं इस बात को नहीं मानता। इस पृथ्वी पर बस दो तरह के लोग रहते हैं, दो इस तरह के लोग जिनका एक -दूसरे से कोई मेल नहीं हो सकता - एक अमीर और दूसरे गरीब। अमीर और गरीब शोषक और शोषितों के बीच आदिकाल से चले आ रहे वर्ग संघर्ष को तेज करने के पीछे पावेल जैसे क्रांतिकारियों का उद्देश्य क्या था इसे अपने मुकदमे की सुनवाई के समय पावेल ने कुछ यूं व्यक्त किया था- हम समाजवादी हैं। इसका मतलब है कि हम निजी सम्पति के खिलाफ हैं। हम मजदूर हैं। हम वे लोग हैं जिनकी मेहनत से बच्चों के खिलौनों से लेकर बड़ी-बड़ी मशीनों तक दुनिया की हर चीज तैयार होती हैं। फिर भी हमें ही अपनी मानवोचित प्रतिष्ठा की रक्षा करने के अधिकार से वंचित रखा जाता है। कोई भी अपने निजी स्वार्थ के लिए हमारा शोषण कर सकता है। इस समय हम कम से कम इतनी आजादी हासिल कर लेना चाहते हैं कि आगे चलकर हम सारी सत्ता अपने हाथों में ले सकें।

यहां 1906 में गोर्की द्वारा लिखित मां उपन्यास की पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक होगा। 1905 में जारशाही रूस में व्याप्त अमानवीय स्थिति और वर्गीय शोषण के खिलाफ रूस के मजदूर वर्ग ने पहली क्रांति की थी। लेकिन वह क्रांति असफल सिद्ध हुई। लेकिन रूसी जनता अब वह नहीं रही जो 1905 से पहले थी।

1905 की असफल क्रांति के बाद लेनिन ने क्रांति के सबक में गर्व से उन महान दिनों को याद किया जब मजदूरों ने अपने उत्पीड़कों के खिलाफ संघर्ष करने को लाखों लाख मेहनतकशों को जगाया था। क्रांति ने निरंकुश सत्ता को जो करारा धक्का दिया, उससे जारशाही को मजबूर होकर जनता को अनेक रियायतें देनी पड़ी। क्रांति जब उभार पर थी, तब जारशाही ने रियायतें दी। जहां उभार कम हुआ, उसने उन्हें वापस लेना शुरू किया। आम जनता की हालत बदतर हो गई। लेनिन ने कहा कि आम जनता का क्रांतिकारी संघर्ष ही उसकी हालत सुधार सकता है। जारशाही कायम है, उसके साथ बड़े जमींदार कायम हैं। इनकी सत्ता को ध्वस्त करना जरूरी है। इस सत्ता के विरूद्ध संघर्ष में सबसे आगे मजदूर बढ़े। वे जानते थे कि जारशाही से निपटे बिना वे पूंजीवादी शोषण से मुक्ति नहीं पा सकते। किसानों का संघर्ष कमजोर था। लेनिन ने खेत मजदूरों और मुफलिस किसानों की बढ़ती हुई संख्या की ओर ध्यान दिलाया, वे शहरी मजदूरों के साथ मिलकर संघर्ष चलाएं इस पर जोर दिया।

1905 की रूसी क्रांति असफल हुई किंतु वह इतिहास की एक विभाजक रेखा बन गई। उससे एक दौर समाप्त हुआ और दूसरा दौर आरंभ हुआ। 1905 की क्रांति ने वह जमीन तैयार